2877

"उत्तर प्रदेश के समकालीन चित्रकार एस0 प्रणाम सिंह के चित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन"

Uttar Pradesh Ke Samkalin Chitrakar S. Pranam Singh Ke Chitron Ka Smikshatmak Adhyyan

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
में पीएच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का

'सार'

शोध निर्देशिका
डा0 नीतू वशिष्ठ
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा
ललित कला विभाग
श्री कुन्द कुन्द जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खतौली
मुजफ्फरनगर

शोध कर्ता
विकाश राज
ललित कला विभाग
एम0ए0, एम0फिल0, नेट (चित्रकला)

शोध केन्द्र
के0 के0 जैन डिग्री कालेज खतौली मुजफ्फरनगर
वर्ष : 2016

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का

'सार'

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभक्त है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिसे धार्मिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं पर्यटन के लिये जाना जाता है। वही यह ललित कलाओं के लिए ख्याति प्राप्त है। भारत कला भवन एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यहां की अद्वितीय शोभा बनाये हुए हैं। जहाँ पर छात्र - छात्राऐं शिक्षा ग्रहण करके अनेक विभागों में अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। वाराणसी धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में भी अत्यधिक प्रसिद्ध है, बनारस घाट एवं कुम्भ का मेला यहाँ का मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिसे अनेक चित्रकारों ने अपने विषय के रूप में अपनी तूलिका से कैनवास पर उकेरा है। यहाँ के भारत कला भवन में क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, एम0एफ0 हुसैन, नन्दलाल बसु आदि प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकारों के चित्र संग्रहीत हैं।

प्रथम अध्याय से पूर्व प्राक्कथन के अन्तर्गत विषय-प्रवेश, विषय-चयन शोध उद्देश्य व महत्व तथा शोध-प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक चित्रकला के विविध आयाम एवं यथार्थवादी चित्रण का बढ़ता प्रभाव विषय पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। तकनीकी विकास के साथ-साथ कलाकार ने भी कम्प्यूटर के द्वारा चित्र बनाने से परहेज नहीं किया। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वी सदी से माना जाता है। आधुनिक कला की चर्चा करते ही राजा रवि वर्मा का नाम सर्वप्रथम आता है। जिन्होंने यूरोपियन शैली का अनुकरण करके भारतीय देवी देवताओं तथा पौराणिक व्यक्तियों के चित्रों को आयल माध्यम में चित्रित किया है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की वाश तकनीक, नन्दलाल के हरिपुरा पोस्टर्स, विनोद बिहारी के भित्ति चित्र कोलाज तथा रामगोपाल विजय वर्गीय के जल एवं वाश तकनीकी, यामिनी राय की लोक शैली, अमृता, शेरगिल के ग्राम्य-जन-जीवन एवं पर्वतीय स्त्री पुरूषों के चित्र, जैसे केले बेचते हुए, हाट जाते हुए, अनेक समकालीन कलाकारों की कला शैली द्वारा कलात्मक अभिव्यक्ति पर

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का

'सार'

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभक्त है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिसे धार्मिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं पर्यटन के लिये जाना जाता है। वही यह ललित कलाओं के लिए ख्याति प्राप्त है। भारत कला भवन एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यहां की अद्वितीय शोभा बनाये हुए हैं। जहाँ पर छात्र - छात्राऐं शिक्षा ग्रहण करके अनेक विभागों में अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। वाराणसी धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में भी अत्यधिक प्रसिद्ध है, बनारस घाट एवं कुम्भ का मेला यहाँ का मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिसे अनेक चित्रकारों ने अपने विषय के रूप में अपनी तूलिका से कैनवास पर उकेरा है। यहाँ के भारत कला भवन में क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, एम0एफ0 हुसैन, नन्दलाल बसु आदि प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकारों के चित्र संग्रहीत हैं।

प्रथम अध्याय से पूर्व प्राक्कथन के अन्तर्गत विषय-प्रवेश, विषय-चयन शोध उद्देश्य व महत्व तथा शोध-प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक चित्रकला के विविध आयाम एवं यथार्थवादी चित्रण का बढ़ता प्रभाव विषय पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। तकनीकी विकास के साथ-साथ कलाकार ने भी कम्प्यूटर के द्वारा चित्र बनाने से परहेज नहीं किया। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वी सदी से माना जाता है। आधुनिक कला की चर्चा करते ही राजा रवि वर्मा का नाम सर्वप्रथम आता है। जिन्होंने यूरोपियन शैली का अनुकरण करके भारतीय देवी देवताओं तथा पौराणिक व्यक्तियों के चित्रों को आयल माध्यम में चित्रित किया है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की वाश तकनीक, नन्दलाल के हरिपुरा पोस्टर्स, विनोद बिहारी के भित्ति चित्र कोलाज तथा रामगोपाल विजय वर्गीय के जल एवं वाश तकनीकी, यामिनी राय की लोक शैली, अमृता, शेरगिल के ग्राम्य-जन-जीवन एवं पर्वतीय स्त्री पुरूषों के चित्र, जैसे केले बेचते हुए, हाट जाते हुए, अनेक समकालीन कलाकारों की कला शैली द्वारा कलात्मक अभिव्यक्ति पर

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का

'सार'

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभक्त है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिसे धार्मिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं पर्यटन के लिये जाना जाता है। वही यह ललित कलाओं के लिए ख्याति प्राप्त है। भारत कला भवन एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यहां की अद्वितीय शोभा बनाये हुए हैं। जहाँ पर छात्र - छात्राऐं शिक्षा ग्रहण करके अनेक विभागों में अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। वाराणसी धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में भी अत्यधिक प्रसिद्ध है, बनारस घाट एवं कुम्भ का मेला यहाँ का मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिसे अनेक चित्रकारों ने अपने विषय के रूप में अपनी तूलिका से कैनवास पर उकेरा है। यहाँ के भारत कला भवन में क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, एम0एफ0 हुसैन, नन्दलाल बसु आदि प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकारों के चित्र संग्रहीत हैं।

प्रथम अध्याय से पूर्व प्राक्कथन के अन्तर्गत विषय-प्रवेश, विषय-चयन शोध उद्देश्य व महत्व तथा शोध-प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक चित्रकला के विविध आयाम एवं यथार्थवादी चित्रण का बढ़ता प्रभाव विषय पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। तकनीकी विकास के साथ-साथ कलाकार ने भी कम्प्यूटर के द्वारा चित्र बनाने से परहेज नहीं किया। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वी सदी से माना जाता है। आधुनिक कला की चर्चा करते ही राजा रवि वर्मा का नाम सर्वप्रथम आता है। जिन्होंने यूरोपियन शैली का अनुकरण करके भारतीय देवी देवताओं तथा पौराणिक व्यक्तियों के चित्रों को आयल माध्यम में चित्रित किया है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की वाश तकनीक, नन्दलाल के हरिपुरा पोस्टर्स, विनोद बिहारी के भित्ति चित्र कोलाज तथा रामगोपाल विजय वर्गीय के जल एवं वाश तकनीकी, यामिनी राय की लोक शैली, अमृता, शेरगिल के ग्राम्य-जन-जीवन एवं पर्वतीय स्त्री पुरुषों के चित्र, जैसे केले बेचते हुए, हाट जाते हुए, अनेक समकालीन कलाकारों की कला शैली द्वारा कलात्मक अभिव्यक्ति पर

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का

'सार'

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभक्त है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिसे धार्मिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं पर्यटन के लिये जाना जाता है। वही यह ललित कलाओं के लिए ख्याति प्राप्त है। भारत कला भवन एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यहां की अद्वितीय शोभा बनाये हुए हैं। जहाँ पर छात्र - छात्राऐं शिक्षा ग्रहण करके अनेक विभागों में अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। वाराणसी धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में भी अत्यधिक प्रसिद्ध है, बनारस घाट एवं कुम्भ का मेला यहाँ का मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिसे अनेक चित्रकारों ने अपने विषय के रूप में अपनी तूलिका से कैनवास पर उकेरा है। यहाँ के भारत कला भवन में क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, एम0एफ0 हुसैन, नन्दलाल बसु आदि प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकारों के चित्र संग्रहीत हैं।

प्रथम अध्याय से पूर्व प्राक्कथन के अन्तर्गत विषय-प्रवेश, विषय-चयन शोध उद्देश्य व महत्व तथा शोध-प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक चित्रकला के विविध आयाम एवं यथार्थवादी चित्रण का बढ़ता प्रभाव विषय पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। तकनीकी विकास के साथ-साथ कलाकार ने भी कम्प्यूटर के द्वारा चित्र बनाने से परहेज नहीं किया। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वी सदी से माना जाता है। आधुनिक कला की चर्चा करते ही राजा रवि वर्मा का नाम सर्वप्रथम आता है। जिन्होंने यूरोपियन शैली का अनुकरण करके भारतीय देवी देवताओं तथा पौराणिक व्यक्तियों के चित्रों को आयल माध्यम में चित्रित किया है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की वाश तकनीक, नन्दलाल के हरिपुरा पोस्टर्स, विनोद बिहारी के भित्ति चित्र कोलाज तथा रामगोपाल विजय वर्गीय के जल एवं वाश तकनीकी, यामिनी राय की लोक शैली, अमृता, शेरगिल के ग्राम्य-जन-जीवन एवं पर्वतीय स्त्री पुरूषों के चित्र, जैसे केले बेचते हुए, हाट जाते हुए, अनेक समकालीन कलाकारों की कला शैली द्वारा कलात्मक अभिव्यक्ति पर